''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ''

JAYOTI VIDYAPEETH WOMEN'S UNIVERSITY, JAIPUR

Faculty of Education & Methodology

Faculty Name - JV'n Chanda kumawat
(Assistant Professor)

Program - 3 Semester / Year M.A)

Course Name - HINDI kavya

Session No. & Name - 1.1- 0.1 **(** तुलसीदास का साहित्यक – परिचय)

Academic Day starts with – 10.8.23 THURDAY

PLANNING AND STARTED

(Basic Knowledge For Student)

"तुलसी एक ऐसी महत्त्वपूर्ण प्रतिभा थे, जो युगों के बाद एक बार आया करती है तथा ज्ञान-विज्ञान, भाव-विभाव अनेक तत्त्वों का समाहार होती है। इनकी प्रतिभा इतनी विराट् थी कि उसने भारतीय संस्कृति की सारी विराटता को आत्मसात् कर लिया था। ये महान् द्रष्टा थे, परिणामतः स्रष्टा थे। ये विश्व-कवि थे और हिन्दी साहित्य के आकाश थे, सब कुछ इनके घेरे में था।" गोस्वामी तुलसीदास जी के जीवन-वृत के बारे में अन्तःसाक्ष्य एवं बहि:साक्ष्य के आधार पर विद्वानों ने विविध मत प्रस्तुत किए हैं,

तुलसीदास का साहित्यिक परिचय

साहित्यिक सेवाएँ— तुलसीदास जिस काल में उत्पन्न हुए, उस समय हिन्दू-जाति धार्मिक, सामाजिक व राजनीतिक अधोगति को पहुँच चुकी थी। हिन्दुओं का धर्म और आत्म-सम्मान यवनों के अत्याचारों से कुचला जा रहा था। सभी ओर निराशा का वातावरण व्याप्त था। ऐसे समय में अवतरित होकर गोस्वामी जी ने जनता के सामने भगवान राम का लोकरक्षक रूप प्रस्तुत किया, जिन्होंने यवन शासकों से कहीं अधिक शक्तिशाली रावण को केवल वानर-भालुओं के सहारे ही कुलसहित नष्ट कर दिया था। गोस्वामी जी का अकेला यही कार्य इतना महान् था कि इसके बल पर वे सदा भारतीय जनता के हृदय सम्राट् बने रहेंगे।

काव्य के उद्देश्य के सम्बन्ध में तुलसी का दृष्टिकोण सर्वथा सामाजिक था। इनके मत में वही कीर्ति, कविता और सम्पत्ति उत्तम है जो गंगा के समान सबका हित करने वाली हो— "कीरति भनिति भूति भलि सोई । सुरसरि सम सबकर हित होई ॥" जनमानस के समक्ष सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन का उच्चतम आदर्श रखना ही इनका काव्यादर्श था। जीवन के मार्मिक स्थलों की इनको अद्भुत पहचान थी। तुलसीदास ने राम के शक्ति, शील, सौन्दर्य समन्वित रूप की अवतारणा की है। इनका सम्पूर्ण काव्य समन्वय-भाव की विराट चेष्टा है। ज्ञान की अपेक्षा भक्ति का राजपथ ही इन्हें अधिक रुचिकर लगा है।

तुलसीदास की प्रमुख रचनाएँ

गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा लिखित 37 ग्रन्थ माने जाते हैं, किन्तु प्रामाणिक ग्रन्थ 12 ही माने जाते हैं, जिनमें पांच प्रमुख हैं— श्रीरामचरितमानस, विनयपत्रिका,

कवितावली, गीतावली, दोहावली। अन्य ग्रंथ है— बरवै रामायण, रामलला नहछू, कृष्ण गीतावली, वैराग्य संदीपनी, जानकी-मंगल, पार्वती-मंगल, रामाज्ञा प्रश्न और हनुमान-वाहक आदि।

रचनाएं एवं कृतियाँ– कविकुलगुरु तुलसीदास जी की 12 रचनाओं का सम्पूर्ण उल्लेख मिलता है—

(1) रामलला नहछू – गोस्वामीजी ने लोकगीत की 'सोहर' शैली में इस नहछू-ग्रन्थ की रचना की थी। यह इनकी प्रारम्भिक रचना है।

(2) वैराग्य-संदीपनी – इसके तीन भाग हैं। पहले भाग में 6 छन्दों में 'मंगलाचरण' है। दूसरा 'सन्त-महिमा-वर्णन' और तीसरा भाग 'शान्ति-भाव-वर्णन' का है।

(3) रामाज्ञा-प्रश्न – इसमें शुभ-अशुभ शकुनों का वर्णन है। यह ग्रन्थ सात सर्गों में है। इसमें रामकथा का वर्णन किया गया है।

(4) जानकी-मंगल – इसमें कवि ने श्रीराम और जानकी के मंगलमय विवाह उत्सव का मधुर शब्दों में वर्णन किया है।

(5) श्रीरामचरितमानस – इस विश्वप्रसिद्ध ग्रन्थ में कवि ने मर्यादा-पुरुषोत्तम श्रीराम के चरित्र का व्यापक वर्णन किया है।

(6) पार्वती-मंगल – यह मंगल-काव्य है। गेय पद होने के कारण इसमें संगीतात्मकता का गुण विद्यमान है। इस रचना का उद्देश्य 'शिव-पार्वती-विवाह' का वर्णन करना है।

(7) गीतावली – इसमें संकलित 230 पदों में राम के चरित्र का वर्णन है। कथानक के आधार पर इन पदों को सात काण्डों में विभाजित किया गया है।

(8) विनयपत्रिका – 'विनयपत्रिका' का विषय भगवान् राम को कलियुग के विरुद्ध प्रार्थना-पत्र देना है। इसमें तुलसी भक्त और दार्शनिक कवि के रूप में दिखाई दिए हैं।

(9) श्रीकृष्णगीतावली – इसके अन्तर्गत केवल 61 पदों में कवि ने पूरी श्रीकृष्ण-कथा मनोहारी ढंग से प्रस्तुत की है।

(10) बरवै-रामायण – यह गोस्वामीजी की स्फुट रचना है। इसमें श्रीराम-कथा संक्षेप में वर्णित है।

(11) दोहावली – इस संग्रह-ग्रन्थ में कवि की सूक्ति-शैली के दर्शन होते हैं।

(12) कवितावली – इस कृति में कवित्त और सवैया शैली में रामकथा का वर्णन किया गया है।

तुलसीदास जी की भाषा शैली

भाषा-शैली— ब्रज एवं अवधी दोनों ही भाषाओं पर तुलसी का समान अधिकार था। कवितावली, गीतावली, विनयपत्रिका आदि रचनाएं ब्रजभाषा में और रामचरितमानस अवधी भाषा में है। अवधी भाषा में संस्कृत के तत्सम शब्दों के प्रयोग के कारण इनकी रचनाओं में साहित्यिकता उच्चकोटि की है। यत्र-तत्र अरबी, फारसी, उर्दू तथा बुन्देलखण्डी भाषाओं के शब्द भी देखने को मिलते हैं। अपने समय में प्रचलित दोहा, चौपाई, कवित्त, सवैया, पद आदि काव्य-शैलियों में तुलसी ने पूर्ण सफलता के साथ

काव्य रचना की है। दोहावली में दोहा पद्धति, रामचरितमानस में दोहा-चौपाई पद्धति, विनयपत्रिका में गीति पद्धति, कवितावली में कवित्त- सवैया पद्धति को इन्होंने अपनाया है। इन सभी शैलियों में इन्हें अद्भुत सफलता मिली है जो इनकी सर्वतोमुखी प्रतिभा तथा काव्यशास्त्र में इनकी गहन अंतर्दृष्टि की परिचायक है। इनके काव्य में भाव-पक्ष के साथ कला-पक्ष की भी पूर्णता है जिसको नीचे समझाया गया है।

तुलसीदास की काव्यगत विशेषताएँ

काव्यगत विशेषताएँ— तुलसी की कविता का भाव पक्ष और कला पक्ष दोनों ही उच्चकोटि के हैं। इसीलिए तुलसी हिन्दी साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। इनकी काव्यगत विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

भाव पक्ष— तुलसीदास जी की भक्ति दास्य-भाव की है। वे राम के अनन्य भक्त हैं। राम स्वामी हैं और तुलसी सेवक हैं। तुलसी का काव्य हिन्दू धर्म, संस्कृति और दर्शन का पवित्र संगम है। इनकी कविता में समन्वय की भावना सर्वत्र विद्यमान है। इन्होंने शैव और वैष्णव के भेद को समाप्त करके धार्मिक समन्वय का प्रयास किया। उनके राम कहते हैं-

शिव द्रोही मम दास कहावा।

सो नर मोहि सपनेहुं नहिं भावा॥

सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन का उच्चतम आदर्श 'जन-मानस के सम्मुख रखना ही तुलसी के काव्य का आदर्श था।

कला पक्ष— तुलसी ने अवधी और ब्रज दोनों भाषाओं का समान रूप में प्रयोग किया है। इन्होंने अपने समय तक प्रचलित दोहा, चौपाई, कवित्त, सवैया, पद आदि काव्य शैलियों में पूर्ण सफलता के साथ 'काव्य रचना' की है। इसकी रचना में प्रायः सभी प्रकार के अलंकारों एवं रसों का बड़ा सुन्दर और स्वाभाविक समावेश हुआ है। उपमा, रूपक और उत्प्रेक्षा तुलसी के प्रिय अलंकार हैं। उत्पेक्षा, अनुप्रास और रूपक अलंकार का एक साथ प्रयोग देखिए-

अनुराग-तड़ाग में भानु उदै।

विगसी मनौ मंजुल कंज-कली॥

तुलसीदास जी का साहित्य में स्थान

साहित्य में स्थान— गोस्वामी तुलसीदास हिन्दी-साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। इनके द्वारा हिन्दी कविता की सर्वतोमुखी उन्नति हुई। इन्होंने अपने काल के समाज की विसंगतियों पर प्रकाश डालते हुए उनके निराकरण के उपाय सुझाये। साथ ही अनेक मतों और विचारधाराओं में समन्वय स्थापित करके समाज में पुनर्जागरण का मन्त्र फूँका। इसीलिए इन्हें समाज का पथ-प्रदर्शक कवि कहा जाता है।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्रीरामचरितमानस जैसे महाकाव्य की रचना करके तुलसी हिन्दी-साहित्य ही नहीं, अपितु विश्व-साहित्य की महान् विभूति बन गये हैं। इनकी कविता में काव्य के सभी गुणों का सुन्दर सम्मिश्रण है। अयोध्यासिंह उपाध्याय जी ने इनके विषय में ठीक ही कहा है—

गोस्वामी तुलसीदास राम के भक्त थे। इनकी भक्ति दास्य-भाव की थी। सम्वत् 1631 में इन्होंने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'रामचरितमानस' की रचना आरम्भ की। इनके इस ग्रन्थ में विस्तार के साथ राम के चरित्र का वर्णन हुआ है। तुलसी के राम में शक्ति, शील और सौन्दर्य तीनों गुणों का अपूर्व सामंजस्य है। मानव-जीवन के सभी उच्चादर्शों का समावेश करके इन्होंने राम को मर्यादा पुरुषोत्तम बना दिया है। अवधी भाषा में रचित रामचरितमानस बड़ा ही लोकप्रिय ग्रन्थ है। विश्व-साहित्य के प्रमुख ग्रन्थों में इसकी गणना की जाती है। रामचरितमानस के अतिरिक्त इन्होंने जानकी-मंगल, पार्वती-मंगल, रामलला-नहछू, रामाज्ञा-प्रश्न, बरवै-रामायण, वैराग्य-संदीपनी, कृष्ण-गीतावली, दोहावली, कवितावली, गीतावली तथा विनय-पत्रिका आदि ग्रन्थों की रचना की।

तुलसीदास जी की रचनाओं में भारतीय सभ्यता और संस्कृति का पूर्ण चित्रण देखने को मिलता है। रामचरितमानस आज भी देश की जनता को आदर्श जीवन के निर्माण की प्रेरणा प्रदान करता है।